



सत्यमेव जयते



भारत के राष्ट्रपति

श्री राम नाथ कोविन्द का

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम सन्देश

नई दिल्ली, जनवरी 25, 2018

मेरे प्यारे देशवासियों

1. अपने देश के, उनहतरवें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई! यह राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना के साथ, हमारी सम्प्रभुता का उत्सव मनाने का भी अवसर है। यह, उन लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के महान प्रयासों और बलिदान को, आभार के साथ याद करने का दिन है, जिन्होंने अपना खून-पसीना एक करके, हमें आज़ादी दिलाई, और हमारे गणतंत्र का निर्माण किया। आज का दिन हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों को, नमन करने का भी दिन है।
2. देश के लोगों से ही लोकतंत्र बनता है। हमारे नागरिक, केवल गणतंत्र के निर्माता और संरक्षक ही नहीं हैं, बल्कि वे ही इसके आधार-स्तम्भ हैं। हमारा हर नागरिक, हमारे लोकतंत्र को शक्ति देता है - हर एक सैनिक, जो हमारे देश की रक्षा करता है; हर-एक किसान, जो हमारे देशवासियों का पेट भरता है; हर-एक पुलिस और अर्ध-सैनिक बल, जो हमारे देश को सुरक्षित रखता है; हर-एक मां, जो देशवासियों का पालन-पोषण करती है; हर-एक डॉक्टर, जो देशवासियों का उपचार करता है; हर-एक नर्स, जो देशवासियों की सेवा करती है; हर-एक स्वच्छता कर्मचारी, जो हमारे देश को साफ-सुथरा और स्वच्छ रखता है; हर-एक अध्यापक, जो हमारे देश को शिक्षित बनाता है; हर एक वैज्ञानिक, जो हमारे देश के लिए इनोवेशन करता है; हर-एक मिसाइल टेक्नोलॉजिस्ट, जो हमारे देश की क्षमता को एक नयी ऊंचाई पर ले जाता है; हर-एक जागरूक आदिवासी, जो हमारे देश के पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखता है; हर-एक इंजीनियर, जो हमारे देश को एक नया स्वरूप देता है; हर-एक कामगार, जो हमारे देश का निर्माण करता है; हमारे वरिष्ठ नागरिक, जो गर्व के साथ यह देखते हैं कि वे अपने लोकतंत्र को कितना आगे ले आये हैं; हर-एक युवा, जिसमें हमारे देश की ऊर्जा, आशाएं, और भविष्य समाए हुए हैं; और हर-एक प्यारा बच्चा, जो हमारे देश के लिए नए सपने देख रहा है।
3. ऐसे और भी बहुत सारे लोग हैं, जिनका मैं उल्लेख नहीं कर पाया, वे भी अलग-अलग तरीकों से, देश को अपना योगदान दे रहे हैं। आप सभी को गणतंत्र दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं!
4. 26 जनवरी, 1950 को, भारत एक गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ। हमारे राष्ट्र निर्माण की यात्रा में, यह दूसरा महत्वपूर्ण पड़ाव था। हमें आज़ादी हासिल किये हुए, लगभग ढाई साल ही बीते थे। लेकिन संविधान का निर्माण करने, उसे लागू करने और भारत के गणराज्य की स्थापना करने के साथ ही, हमने वास्तव में, 'सभी नागरिकों के बीच बराबरी' का आदर्श स्थापित किया, चाहे हम किसी भी धर्म, क्षेत्र या समुदाय के क्यों न हों। समता या बराबरी के इस आदर्श ने, आज़ादी के साथ प्राप्त हुए स्वतंत्रता के आदर्श को पूर्णता प्रदान की। एक तीसरा आदर्श भी था, जो हमारे लोकतंत्र के निर्माण के सामूहिक प्रयासों को, और हमारे सपनों के भारत को, सार्थक बनाता था। यह था, बंधुता या भाईचारे का आदर्श! मिलजुलकर रहने और काम करने का आदर्श!
5. जैसा कि हम जानते हैं, हमारी आज़ादी, हमें एक कठिन संघर्ष के बाद मिली थी। इस संग्राम में, लाखों लोगों ने हिस्सा लिया था। उन स्वतंत्रता सेनानियों ने, देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। बहुतों ने तो अपने प्राणों की आहुति दे दी। आज़ादी के सपने से पूरी तरह प्रेरित हो कर, महात्मा गाँधी के नेतृत्व में, ये महान सेनानी, मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करके संतुष्ट हो सकते थे। उनका लक्ष्य उन्हें प्राप्त हो चुका था। लेकिन, उन्होंने पल भर भी आराम नहीं किया। वे रुके नहीं, बल्कि दुगने उत्साह के साथ, संविधान बनाने के महत्वपूर्ण कार्य में, पूरी निष्ठा के साथ जुट गए।

उनकी नजर में, हमारा संविधान, हमारे नए राष्ट्र के लिए केवल एक बुनियादी कानून ही नहीं था, बल्कि सामाजिक बदलाव का एक दस्तावेज भी था।

6. हमारे संविधान निर्माता बहुत दूरदर्शी थे। वे 'कानून का शासन' और 'कानून द्वारा शासन' के महत्व और गरिमा को भली-भांति समझते थे। वे हमारे राष्ट्रीय जीवन के एक अहम दौर के प्रतिनिधि थे। हम सौभाग्यशाली हैं कि उस दौर ने, हमें संविधान और गणतंत्र के रूप में, अनमोल विरासत दी है।

प्यारे देशवासियों,

7. जिस शुरुआती दौर में, हमारे संविधान का स्वरूप तय किया गया, उस दौर से मिली हुई सीख, हमारे लिए आज भी प्रासंगिक है। हम जो भी कार्य करें, जहां भी करें, और हमारे जो भी लक्ष्य हों - उस दौर की सीख, हर क्षेत्र में हमारे लिए उपयोगी है। वह हमारे राष्ट्र निर्माण के अभियान को प्रेरणा देती है।

राष्ट्र निर्माण एक भव्य और विशाल अभियान है। साथ ही साथ, यह लाखों ही नहीं, बल्कि करोड़ों छोटे - बड़े अभियानों को जोड़कर बना, एक सम्पूर्ण अभियान है। ये सभी छोटे - बड़े अभियान समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

नागरिकों के चरित्र का निर्माण करना, परिवारों द्वारा अच्छे संस्कारों की नींव डालना, गली - मुहल्ले - गांव और शहर में भाईचारे का माहौल बनाना, छोटे-बड़े कारोबारों की शुरुआत करना, संस्थाओं को सिद्धांतों और मूल्यों के आधार पर चलाना, और समाज से अंध-विश्वास तथा असमानता को मिटाना, ये सभी राष्ट्र-निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान हैं।

- जहां बेटियों को, बेटों की ही तरह, शिक्षा, स्वास्थ्य और आगे बढ़ने की सुविधाएं दी जाती हैं, ऐसे समान अवसरों वाले परिवार और समाज ही, एक खुशहाल राष्ट्र का निर्माण करते हैं। महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए, सरकार कानून लागू कर सकती है और नीतियां भी बना सकती है - लेकिन ऐसे कानून और नीतियां तभी कारगर होंगे जब परिवार और समाज, हमारी बेटियों की आवाज़ को सुनेंगे। हमें परिवर्तन की इस पुकार को सुनना ही होगा।
- आत्म-विश्वास से भरे हुए, और आगे की सोच रखने वाले युवा ही, एक आत्म-विश्वास-पूर्ण और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करते हैं। हमारे 60 प्रतिशत से अधिक देशवासी, 35 वर्ष से कम उम्र के हैं। इन पर ही हमारी उम्मीदों का दारोमदार है। हमने साक्षरता को काफी बढ़ाया है; अब हमें शिक्षा और ज्ञान के दायरे और बढ़ाने होंगे। शिक्षा-प्रणाली में सुधार करना, उसे ऊंचा उठाना, और उसके दायरे को बढ़ाना - तथा इक्कीसवीं सदी की डिजिटल अर्थव्यवस्था, जीनोमिक्स, रोबोटिक्स और ऑटोमेशन की चुनौतियों के लिए समर्थ बनाना - हमारा उद्देश्य होना चाहिए। हमने अपने युवाओं को शिक्षा और कौशल प्रदान करने के लिए, बहुत से कार्यक्रम शुरू किए हैं, ताकि वे आज की दुनिया में, विश्व स्तर पर, अपनी जगह बना सकें। इन कार्यक्रमों के लिए व्यापक संसाधन मुहैया कराए गए हैं। अपार संभावनाओं से भरे, हमारे प्रतिभावान युवाओं को, इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाना चाहिए।
- इनोवेटिव बच्चे ही एक इनोवेटिव राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इस लक्ष्य को पाने के लिए, हमें एक जुनून के साथ, जुट जाना चाहिए। हमारी शिक्षा- प्रणाली में, खासकर स्कूल में, रटकर याद करने और सुनाने के बजाय, बच्चों को सोचने और तरह-तरह के प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमने खाद्यान्न उत्पादन में काफी बढ़ोतरी की है, लेकिन अभी भी, कुपोषण को दूर करने और प्रत्येक बच्चे की थाली में जरूरी पोषक तत्व उपलब्ध कराने की चुनौती बनी हुई है। यह हमारे बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए, और हमारे देश के भविष्य के लिए, बहुत ही महत्वपूर्ण है।
- मुहल्ले - गांव और शहर के स्तर पर सजग रहने वाले नागरिकों से ही, एक सजग राष्ट्र का निर्माण होता है। हम अपने पड़ोसी के निजी मामलों और अधिकारों का सम्मान करते हैं। त्योहार मनाते हुए, विरोध प्रदर्शन करते हुए या किसी और अवसर पर, हम अपने पड़ोसी की सुविधा का ध्यान रखते हैं। किसी दूसरे नागरिक की गरिमा, और निजी भावना का उपहास किए बिना, किसी के नजरिये से या इतिहास की किसी घटना के बारे में भी, हम असहमत हो सकते हैं। ऐसे उदारतापूर्ण व्यवहार को ही, भाईचारा कहते हैं।

- **निःस्वार्थ भावना वाले नागरिकों और समाज से ही, एक निःस्वार्थ भावना वाले राष्ट्र का निर्माण होता है।** स्वयंसेवी समूह बेसहारा लोगों और बच्चों, और यहां तक कि बेघर पशुओं की भी, देखभाल करते हैं; समुद्री तटों जैसे सार्वजनिक स्थानों और नदियों को साफ रखते हैं। यहां हम किसी अपरिचित व्यक्ति की मदद करने के लिए, रक्तदान या अंगदान करने को तैयार रहते हैं। यहां आदर्शों से प्रेरित नागरिक, दूर-दराज के इलाकों में जाकर, बच्चों को, लगन के साथ, पढ़ाते हैं, और शिक्षा के माध्यम से उन बच्चों की जिंदगी संवार देते हैं। वे किसी के कहने पर नहीं, बल्कि अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर, ऐसा करते हैं।
ऐसे राष्ट्र में, संपन्न परिवार, अपनी इच्छा से, अपनी सुविधा का त्याग कर देता है - आज यह सब्सिडी वाली एलपीजी हो, या कल कोई और सुविधा भी हो - ताकि इसका लाभ किसी ज्यादा जरूरतमंद परिवार को मिल सके। आइए, हम सभी अपनी तमाम सुविधाओं को एक साथ जोड़कर देखें। और इसके बाद, हम अपने ही जैसी पृष्ठभूमि से आने वाले, उन वंचित देशवासियों की ओर देखें, जो आज भी वहीं खड़े हैं, जहां से कभी हम सबने अपनी यात्रा शुरू की थी। हम सभी अपने-अपने मन में झांके, और खुद से यह सवाल करें 'क्या उसकी जरूरत, मेरी जरूरत से ज्यादा बड़ी है? परोपकार करने और दान देने की भावना, हमारी युगों पुरानी संस्कृति का हिस्सा है। आइए, हम सब इस भावना को, और भी मजबूत बनाएं।
 - **सांस्कृतिक परंपराओं, कलाओं तथा हस्तशिल्प को संरक्षण और बढ़ावा देने के सामूहिक संकल्प से, एक जीवंत संस्कृति वाले राष्ट्र का निर्माण होता है।** चाहे लोक रंगमंच के कलाकार हों, पारंपरिक संगीतकार हों, बुनकर और हथकरघा कारीगर हों, या फिर वे परिवार हों जो सदियों से, लकड़ी के बेहतरीन खिलौने, या रोजमर्रा के इस्तेमाल में आने वाले बांस के सामान, बनाते आ रहे हैं, इन सबके हुनर को जिन्दा रखने के लिए, तथा उन्हें और आगे बढ़ाने के लिए, प्रभावी प्रयास करने होंगे।
 - **अनुशासित और नैतिकतापूर्ण संस्थाओं से, एक अनुशासित और नैतिक राष्ट्र का निर्माण होता है।** ऐसी संस्थाएं, अन्य संस्थाओं के साथ, अपने भाई-चारे का सम्मान करती हैं। उत्कृष्टता के साथ कोई समझौता किए बिना, वे अपने कामकाज में ईमानदारी, अनुशासन और मर्यादा बनाए रखती हैं। ऐसी संस्थाओं में, वहां काम करने वाले लोगों की नहीं, बल्कि संस्था की महत्ता सबसे ऊपर होती है। इन संस्थाओं के सदस्य, **देशवासियों के ट्रस्टी के रूप में**, अपने पद की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं।
8. भारत के राष्ट्र निर्माण के अभियान का एक अहम उद्देश्य, एक बेहतर विश्व के निर्माण में योगदान देना भी है - ऐसा विश्व, जो मेलजोल और आपसी सौहार्द से भरा हो तथा - जिसका अपने साथ, और प्रकृति के साथ, शांतिपूर्ण सम्बन्ध हो। यही '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' का सही अर्थ है। आज के तनाव भरे और आतंकवाद से प्रभावित युग में, यह आदर्श भले ही व्यावहारिक न लग रहा हो, परंतु यही आदर्श हजारों वर्षों से हम सबको प्रेरणा देता आया है। इसकी झलक हमारे संविधान के मूल्यों में भी देखी जा सकती है। हमारा समाज, इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है। और यही आदर्श, हम विश्व समुदाय के सामने भी प्रस्तुत करते हैं।
9. यही भावना, हम प्रवासी भारतीय परिवारों के विषय में भी अपनाते हैं। जब विदेशों में रहने वाले भारतीय, किन्हीं परेशानियों से घिर जाते हैं तब, स्वाभाविक रूप से, हम उनकी मदद करने के लिए आगे आते हैं।
प्यारे देशवासियो,
10. मैंने अभी-अभी, स्वतंत्रता प्राप्ति और पहले गणतंत्र दिवस के बीच के महान दौर का उल्लेख किया। यह दौर - पूरी लगन, संकल्प और प्रतिबद्धता के साथ, देश को संवारने, और समाज की विसंगतियों को दूर करने के लिए किए गए - निरंतर प्रयासों का दौर था। आज फिर, हम एक ऐसे ही मुकाम पर खड़े हैं। एक राष्ट्र के रूप में हमने बहुत कुछ हासिल किया है, परंतु अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। हमारे लोकतंत्र का निर्माण करने वाली पीढ़ी ने, जिस भावना के साथ काम किया था, आज फिर उसी भावना के साथ काम करने की जरूरत है।

11. वर्ष 2020, में हमारे गणतन्त्र को सत्तर वर्ष हो जाएंगे। 2022 में, हम अपनी स्वतंत्रता की पचहत्तरवीं वर्षगांठ मनाएंगे। निकट भविष्य में आने वाले ये बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर हैं। स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान के निर्माताओं द्वारा दिखाए रास्तों पर चलते हुए, हमें एक बेहतर भारत के निर्माण के लिए प्रयास करना है - एक ऐसे भारत के निर्माण के लिए, जो अपनी योग्यता के अनुरूप, इक्कीसवीं सदी में, विकास की नई ऊंचाइयों पर खड़ा होगा और जहां हर-एक नागरिक अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग कर सकेगा।
12. जिस तरह एक मां, अपने बच्चों का पेट भरने के लिए, हमेशा तत्पर रहती है, उसी तरह, इस देश के 130 करोड़ से ज्यादा लोगों का पेट भरने के लिए, हमारे किसान, दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं। हमें अपने **किसान भाई-बहनों** के जीवन को बेहतर बनाने के लिए, और ज्यादा प्रयास करने की जरूरत है। हमारी सशस्त्र सेनाओं तथा पुलिस और अर्धसैनिक बलों के बहादुर जवानों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप साधन एवं उपकरण मिलते रहें, इसके लिए, हमें अपने **सामरिक निर्माण क्षेत्र** को निरंतर आधुनिक और मजबूत बनाए रखना होगा।
- हम 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इन लक्ष्यों के तहत हम **गरीबी को समाप्त करने, सभी के लिए उत्तम शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने और हमारी बेटियों को हर-एक क्षेत्र में समान अवसर दिलाने** के लिए वचनबद्ध हैं।
- हमें **स्वच्छ, हरित और सक्षम ऊर्जा, कम दरों पर**, लोगों तक पहुंचानी है। हमें 'सभी के लिए आवास' के लक्ष्य को, उन करोड़ों परिवारों तक पहुंचाना है, जिन्हें आज भी, अपने घर का इंतजार है। हमें एक ऐसे आधुनिक भारत की रचना करनी है, जो प्रतिभावान लोगों का, और उनकी प्रतिभा के उपयोग के लिए असीम अवसरों वाला देश हो।
13. आज भी, हमारे बहुत से देशवासी, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। वे गरीबी में, किसी तरह, अपनी जिन्दगी गुजार रहे हैं। हमारे इन भाइयों और बहनों को सम्मान देते हुए उनकी बुनियादी जरूरतों को पर्याप्त मात्रा में पूरा करना, और विकास के अवसर निरंतर प्रदान करते रहना, हमारे लोकतन्त्र का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। उनके जीवन को खुशहाल बनाना ही, हमारे लोकतन्त्र की सफलता की कसौटी है। गरीबी के अभिशाप को, कम-से-कम समय में, जड़ से मिटा देना हमारा पुनीत कर्तव्य है। यह कर्तव्य पूरा करके ही, हम संतोष का अनुभव कर सकते हैं।
- प्यारे देशवासियों,**
14. हम सबका सपना है कि भारत एक विकसित देश बने। उस सपने को पूरा करने के लिए हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे युवा - अपनी कल्पना, आकांक्षा और आदर्शों के बल पर - देश को आगे ले जाएंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे देशवासी अपनी कल्पना, आकांक्षा और आदर्शों के लिए अपने लोकतांत्रिक मूल्यों, और भारत के प्राचीन आदर्शों से, हमेशा प्रेरणा लेते रहेंगे।
15. मैं एक बार फिर, आप सभी को, गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, और आप सभी के उज्ज्वल और सुखद भविष्य की मंगल-कामना करता हूं।

धन्यवाद
जय हिन्द!



**ADDRESS BY THE PRESIDENT OF INDIA
SHRI RAM NATH KOVIND
ON THE EVE OF THE REPUBLIC DAY OF INDIA 2018**

New Delhi, January 25, 2018

My Dear Fellow Citizens

1. Greetings to all of you on the eve of our 69th Republic Day. This is a day for all of us to celebrate and honour our nation and our sovereignty. This is a day to remember with gratitude the enormous efforts and sacrifices of millions of freedom fighters whose blood and sweat gave us Independence and created our Republic. Above all, this is a day to cherish our republican values.
2. A Republic is its people. Citizens do not just make up and preserve a Republic; they are its ultimate stakeholders and in fact pillars. Each one of us is a pillar – the soldier who defends our Republic; the farmer who feeds our Republic; the forces that keep our Republic safe; the mother who nurtures our Republic; the doctor who heals our Republic; the nurse who tends to our Republic; the sanitation worker who makes our Republic cleaner and hygienic; the teacher who educates our Republic; the scientist who innovates for our Republic; the missile technologist who puts our Republic on a new trajectory; the wise tribal who conserves the ecology of our Republic; the engineer who re-imagines our Republic; the construction worker who builds our Republic; senior citizens who can look back with pride at how far they have brought our Republic; the youth in whom lie the energy, hopes and future of our Republic; and our dear children, who dream for our Republic.
3. There are so many more who contribute to our Republic in diverse ways and whom I may have missed mentioning. Happy Republic Day to all of you.
4. India became a Republic on January 26, 1950. This was the second major milestone in our nation building process. Independence had come a little over two years earlier. But it was with the framing and adoption of the Constitution – and the birth of the Republic of India – that we truly achieved the ethic of equality among all citizens, irrespective of religion, region or community. This ethic of equality complemented the liberty that had come at Independence. And a third principle also defined both the cooperative efforts at creating our Republic as well as the India that we wished to be. This was the principle of fraternity.
5. Independence had come after a great struggle in which millions had participated. They gave their all; many gave their lives. Inspired and led by Mahatma Gandhi, the men and women who took us to freedom could

have rested on the gaining of Independence. They could have let down their guard, and remained satisfied with political freedom. But they did not rest. Instead, they re-doubled their efforts. They immersed themselves in the process of writing a Constitution. They saw the Constitution not just as a basic law for a new nation, but as a scripture for social transformation.

6. Our Constitution framers were men and women with great foresight. They understood the majesty of the rule of law, and of rule by laws. They represented an important phase in our national life. We are fortunate to have inherited its legacy in the form of the Constitution and the Republic.

FELLOW CITIZENS

7. The lessons from that formative period, the period that gave shape to our Republic, serve us well to this day. They serve us well in whatever we do, wherever we work, whichever goal we aim for. These lessons continue to spur our nation building project. Nation building is a grand project. But it is also the compilation of a million – rather, a billion – smaller projects, each as sacred as the other. Nation building is also about building a family, building a neighbourhood, building a community, building an enterprise, building an institution. And building society.
- A happy and equal-opportunity nation is built by happy and equal-opportunity families and communities. Families where girls have the same rights and the same access to education and healthcare as boys. Governments can bring in policies and laws to ensure justice to women – but these policies and laws can only be made effective by families and communities that must hear the voices of our daughters. We cannot shut our ears to their urgings for change.
 - A confident and forward-looking nation is built by confident and forward-looking young people. Over 60 per cent of our fellow citizens are below the age of 35. It is in them that our hopes lie. We have made strides in spreading literacy; now we must expand the frontiers of education and of knowledge. Our aspiration must be to reform, upgrade and enlarge our education system – and to make it relevant to 21st century realities of the digital economy, genomics, robotics and automation.

Many programmes and initiatives have been launched to equip our youth with the education and skills to compete in a globalised world. Sizeable resources have been set aside for these programmes. It is for our talented young people to make the most of these opportunities.

- An innovative nation is built by innovative children. This must be our obsessive goal. Our schooling system has to encourage our children to think and to tinker, not just to memorise and reproduce. We have made strides in tackling hunger, but the challenge of malnutrition and of bringing the right micronutrients to the plate of every child is still there. This is important for both physical and cognitive development of our children – and for the future of our country. We simply have to invest in our human capital.
- A civic-minded nation is built by civic-minded neighbourhoods, whether in our cities or our villages. Where we respect the next-door person's space, privacy and rights. Where we do not inconvenience our

neighbours – while celebrating a festival or while resorting to a protest or on any other occasion. Where one can disagree with another viewpoint – or even with a historical context - without mocking a fellow citizen's dignity and personal space. This is fraternity in action.

- A nation with a sense of selflessness is built by citizens and by a society that embraces selflessness. Where voluntary groups clean public places such as beaches and rivers. And care for orphaned children and homeless people, and even for homeless animals. Where we donate blood or a body organ to help a fellow citizen who may be a stranger to us. Where idealistic individuals travel to remote places to teach children, and change their lives with the magic of education. They do so not because anybody has asked them to, but because of a call from within.

Where a better-off family voluntarily gives up an entitlement – it could be subsidised LPG today and some other entitlement tomorrow – so that another family, which has a greater need, can avail it. Let us all collate our privileges and entitlements. And then look at less-privileged members of a similar background, those who are starting off from where we once started off. And let each of us introspect and ask: Is his need or her need greater than mine? The spirit of philanthropy and of giving is part of our age-old culture. Let us renew it.

- A culturally vibrant nation is built by a collective will that cherishes and preserves cultural traditions, art forms and handicrafts. Whether these be folk theatre artistes, traditional musicians, weavers and handloom workers, or those whose families have been hand-making marvellous wooden toys for centuries. Or day-to-day articles made of bamboo.
 - A disciplined and morally upright nation is built by disciplined and morally upright institutions. Institutions that respect their fraternal relationship with other institutions. Institutions that maintain the integrity, discipline and limits of their functioning, without compromising on excellence. Institutions that are always more important than the individuals located there. And institutions where the holders and members make every attempt to live up to the office they occupy as trustees of the people.
8. And of course the highest stage of India's nation building project is to contribute to building a better world – a composite and cohesive world, a world at peace with itself and at peace with nature. This is the ideal of Vasudhaiva Kutumbakam – of the World being One Family. It is an ideal that may sound impractical in today's times of tensions and of terrorism. But it is an ideal that has inspired India for thousands of years – and that ideal can be felt in the very texture of our constitutional values. The principles of compassion, of assisting those in need, of building capacities of our neighbours, or even of those further away, underpin our society. These are the very principles that we bring to the international community.
 9. Such principles are also meant for our global Indian family. When Indians living abroad face humanitarian or similar challenges, it is natural for us as a country to reach out to them. We have, and we will continue to do so.

FELLOW CITIZENS

10. I referred earlier to that glorious period between Independence and our first Republic Day. This was a period of constant striving – of dedication, determination and commitment to improving our country. And setting right the aberrations of our society. Today, we are at a similar juncture. We have achieved a lot as a nation, but much remains to be done. We need to work on this in the spirit of the generation that gave us our Republic.
11. In 2020, our Republic will turn 70. In 2022, we will celebrate the 75th anniversary of our Independence. These are special occasions and we must strive, in the manner of the leaders of our national movement and the framers of our Constitution, to build the edifice of a better India – an India where each and every citizen will be able to realise his or her full potential. An India that will reach its deserved pedestal in the 21st century.
12. We need to further improve the lives of our hardworking farmers. Like mothers, they toil to feed us – more than a billion of us. We need to continue to modernise and strengthen our strategic manufacturing sector so as to provide the valiant personnel of our Armed Forces, and our police and paramilitary forces, the equipment that they need. We need to move ahead rapidly on the Sustainable Development Goals – Goals that commit us to eliminating poverty and hunger, to universal access to quality education and healthcare, and to giving our daughters equal opportunity in every field. We need to make clean, green, efficient and affordable energy reach our people. We need to ensure that housing for all becomes a living reality for the millions of families who await their own home. We need to craft a modern India that is both a land of talent – and a land of unlimited opportunities for that talent.
13. Above all, our Republic cannot rest and cannot be satisfied without meeting the basic needs and essential dignity of our less well-off brothers and sisters. I refer to those from a less privileged socio-economic background, from the weaker communities and from families that still live at the edge of poverty. It is our sacred obligation to eliminate the curse of poverty in the shortest possible time. This is non-negotiable for the Republic.

FELLOW CITIZENS

14. The promise of a developed India beckons us. This is the new stage of our nation building project on which we have embarked. This is the Republic that our young people need to take forward and enhance – in keeping with their vision, their ambition and their ideals. And their vision, ambition and ideals, I am confident, will always draw inspiration from both our republican values – as well as from our ancient Indian ethos.
15. With those words, I once again wish all of you a very happy Republic Day. And wish all of you a very bright and fulfilling future.

Thank you

JAI HIND!